

॥ श्रीराधावल्लभो विजयते ॥

परम भागवत

श्रीराधावल्लभशरण 'दण्डवती बाबा'

का

जीवन चरित



श्रीमलूक पीठ प्रकाशन, श्रीधाम वृन्दावन-281121



॥ श्रीराधावल्लभो विजयते ॥

परमभागवत

श्रीराधावल्लभशरणजी 'दण्डवती बाबा'

का

जीवन चरित

लेखक

बाबा श्रीनवेलीशरण जी



श्रीमलूक पीठ प्रकाशन

श्रीमलूक पीठ सेवा संस्थान न्यास

वंशीवट, श्रीधाम वृन्दावन-२८११२१ (उ.प्र.)



विषय सूची

• पूर्व पीठिका	११
• वंशपरम्परा व आविर्भाव	१४
• कालियमर्दन कथा श्रवण से मूर्छा	२३
• प्रथम गृहत्याग तथा वापिसी	२६
• उत्कट वैराग्य	२७
• सदैव के लिए गृहत्याग	३०
• कंचन-कीर्ति से छुटकारा	३८
• भगवान् का मंगलमय विधान	३९
• सुमेरु श्रीकृष्ण का स्वरूप	४१
• गुफा के बाद यात्रा का पहला पड़ाव	५१
• गया धाम में पुत्र प्राप्ति हेतु आशीर्वाद	६५
• श्रीधाम वृन्दावन आगमन	७२
• बरसाना यात्रा एवं 'श्रीजी' की भक्तवत्सलता	७४
• श्रीसद्गुरु की प्राप्ति	८५
• नागराज से भजन के लिए अनुमति	१४०
• परिक्रमा की परिभाषा, उसका प्रचलन व महत्व	१६०
• अपंग महिला पर कृपा	१७७
• अपंग महिला का गिरिराजजी की कन्दराओं में सदा के लिए प्रवेश	१८०
• बाबा की ३६५ वीं, दण्डवती परिपूर्ण	१८५
• श्रीधाम बरसाना की परिक्रमा	१८६
• श्रीधाम वृन्दावन की परिक्रमा का भी श्रीगणेश	१८८
• श्रीसद्गुरुदेव की कृपा से पुत्र और पौत्र की प्राप्ति	१९२
• शरणागत के कष्ट निवारण में न देरी और न दूरी	१९३
• पग पग पर सद्गुरु कृपा	१९६
• गुरुदेव की कृपा निरन्तर शिष्यों पर रहती है	१९७
• चरणामृत और ब्रजरज से दुष्टात्मा का उद्धार	१९८
• बारह साल की व्याकुलता के परिणाम स्वरूप संत प्रियाशरणजी का प्रत्यक्ष दर्शन	२०२
• नित्यलीला में प्रवेश	२३७
• उपसंहार	२४०
• परिशिष्ट	२४१

घटनाओं की सूची

घटना क्रमांक	पृष्ठ सं.
१ • गोविन्द का पैर में गोंद लगाकर गरीब बच्चों के लिए पैसे एकत्र करना	१६
२ • डाकुओं का आक्रमण	३२
३ • गोविन्द पर ठाकुर जी की भक्तवत्सलता	३४
४ • गुफा के अन्दर योगीराज से वार्ता	४९
५ • बालयोगी के रूप में गोविन्द	५२
६ • सिंह की आँखों में मुरली मनोहर के दर्शन	५४
७ • सन्त द्वारा ब्रज जाने का आदेश	५६
८ • बाबा विश्वनाथ की कृपा से कामिनी से छुटकारा	६०
९ • विलक्षण पहेली-१	६८
१० • विलक्षण पहेली-२	१४३
११ • ब्रह्मलीन होने के बाद भी श्रीप्रियाशरण जी ने दर्शन दिए	१४६
१२ • नागराज से भजन साधन हेतु आज्ञा	१५२
१३ • चतुरोनगन का प्रथम साक्षात्कार	१५६
१४ • चतुरोनगन का दुबारा साक्षात्कार	१५८
१५ • अपंग महिला द्वारा दण्डवती बाबा के दर्शन	१७२
१६ • अपंग महिला द्वारा श्रीगिरिराजजी की दण्डवती परिक्रमा	१७५
१७ • जलभराव से श्रीगिरिराजजी ने बाबा को बचाया	१८१
१८ • पाँच फन वाले सर्प का दर्शन	१८४
१९ • राधा नाम उच्चारण से बन्दरों का आतंक समाप्त	१८६
२० • वकील के हस्ताक्षर ठाकुर जी ने किए	२००
२१ • बीस रुपये के लिए मथुरा की यात्रा	२०४
२२ • छोटे नोट-बड़े नोट	२०६
२३ • आशीर्वाद से महिला का ऑपरेशन सफल	२०९
२४ • चरण सेवा से मृतक लड़के का उद्धार	२१२
२५ • निष्ठावान शिष्य को विरक्त वेष प्रदान	२१४
२६ • परिक्रमा में शेर के दर्शन	२१५
२७ • सेब फल वाली प्रथम घटना	२१७
२८ • सेब फल वाली द्वितीय घटना	२१७

अपने आश्वासन में गोविन्द ने भगवान् की अमोघ कृपाशक्ति पर विश्वास रखकर निश्चित होने की बात कही थी। नियति ने इसे सन्त के आशीर्वाद के रूप में परिणत कर दिया। श्रीनाभादास जी रचित भक्तमाल ग्रन्थ में कहा गया है कि श्रीठाकुर जी चारों युगों में अर्थात् सदा सर्वदा अपने भक्त की वाणी को सत्य बना देते हैं—

चारों युग चतुर्भुज सदा भक्त गिरा साँची करन ॥”

छप्पय सं. ५२

इस छप्पय में श्रीनाभा जी ने ऐसे अनेक भक्तों का संक्षिप्त परिचय दिया है जिनके मुख से परिस्थितिवशात् कोई ऐसी बात निकल गई जो देशकाल के अनुसार उस समय उतनी वास्तविक नहीं थी अथवा भक्त के मुख से निकली हुई इस बात का प्रत्यक्ष में कोई चिह्न उपलब्ध नहीं था, केवल अपने दृढ़ विश्वास के आधार पर ही ऐसा कहा गया था परन्तु भक्तवत्सल श्रीभगवान् ने प्रकृति के नियमों में उलट-फेर कर भक्तों के मुख से निकली हुई बातों को सर्वथा सत्य कर दिया। गयाधाम में गोविन्द के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। भगवत् कृपा ने गोविन्द के मुख से सहज निकले हुए वचनों को उनके आशीर्वाद का रूप दे दिया। लखन बाबू की छोटी पत्नी गर्भवती हुई और समयानुसार उन्हें पुत्र (सन्तान) की प्राप्ति हुई।

गया निवास की अवधि की एक अन्य घटना भी यहाँ उल्लेखनीय है जो कई वर्ष बाद स्वयं गोविन्द ने सुनाई थी। प्रोफेसर राधामोहन नामक एक व्यक्ति गोविन्द के विषय में किसी से सुनकर उनसे मिलने के लिए आया। प्रथम दर्शन से ही राधामोहन के मन में गोविन्द के प्रति श्रद्धाभाव का ऐसा उन्मेष हुआ जो फिर जीवन भर बना रहा। कुछ दिनों के अन्तर से वह

श्रीधाम बरसाना की परिक्रमा

कुछ दिन पश्चात् ही उनके अन्दर एक नई प्रेरणा जगी उन्होंने विचार किया कि श्रीगिरिराज परिक्रमा के समान श्रीबरसाना धाम की भी ३६५ दण्डवती परिक्रमा लगानी चाहिए। इस विचार के आते ही वे एक नई स्फूर्ति और उत्साह से भर गए। वहाँ निवास कर रहे संतों से अनुमति लेकर तथा श्रीलाड़ली जी के मन्दिर में उनसे दण्डवती सफल होने की प्रार्थना कर बाबा ने परिक्रमा प्रारम्भ कर दी। यह परिक्रमा उन्होंने कहां से प्रारम्भ की इसकी कोई निश्चित जानकारी हमें नहीं प्राप्त हो सकी। यह भी पता नहीं चल पाया की श्रीबरसाना की दण्डवती में उन्हें कितना समय लगा। यहाँ का परिक्रमा मार्ग लगभग ३ किलोमीटर का माना जाता है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि उन्हें इसमें लगभग ढाई वर्ष का समय लगा होता। बरसाना की दण्डवती से सम्बन्धित एक छोटी सी घटना बाबा सुनाया करते थे।

घटना क्रमांक १९

राधा नाम उच्चारण से बन्दरों का आतंक समाप्त

एक बार परिक्रमा में बाबा ऐसे स्थल पर थे जहाँ आसपास दूसरा व्यक्ति नहीं था, उस एकान्त स्थल में अचानक चारों तरफ से कई बन्दर आ गए और उन्होंने बाबा को घेर लिया कोई उनके कंधे पर चढ़ गया, कोई सिर पर कोई उनकी पीठ पर लटक गया और कोई उनके कपड़े खींचने लगा। बन्दरों का यह हमला इतना तीव्र था कि बाबा सहसा कुछ समझ नहीं पाए। वहाँ आसपास कोई व्यक्ति भी नहीं था जिसे सहयोग के लिए बुलाते। तब बाबा ने अपने नेत्रबंद किए और उच्चस्वर से राधा राधा राधा नाम पुकारने लगे। इससे धीरे-धीरे एक-एक करके सभी बन्दर